कहानियों द्वारा सीखना

पद्मा बी. एम.

परिचय

कहानियाँ जी लुभाती हैं व सभी के द्वारा पसन्द की जाती हैं। हमारे इतिहास और मिथकशास्त्र कहानियों से भरे पड़े हैं और अपने बचपन में सुनी कहानियाँ हम कभी नहीं भूलते। कन्नड़ा में, कागक्का *गुबक्का* (कौवा और गौरैया), *गोविना हाडु* (गाय का गीत), *एलु समुद्रदा आछे इरुवा राक्षसा* (सात समुद्र पार रहने वाला राक्षस) जैसी कहानियाँ हमेशा याद की जाती हैं। चूँकि कहानियाँ सभी को पसन्द होती है, मैं दृढ़ता से आग्रह करती हूँ कि स्कूलों में सभी विषय कहानियों के माध्यम से पढ़ाए जाएँ।

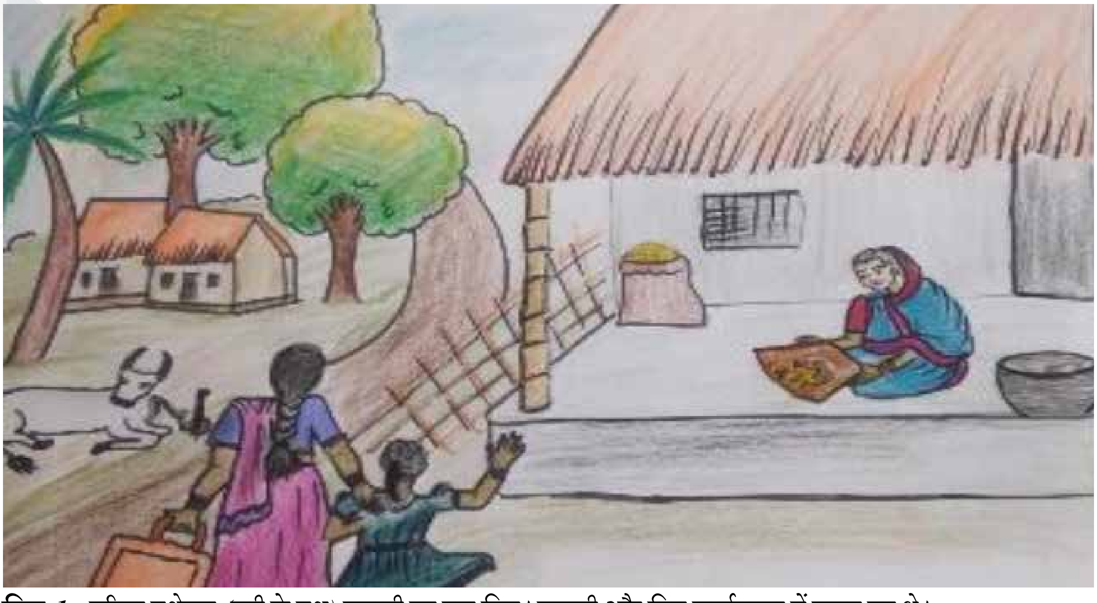
बच्चों की कहानियों की खोज

कन्नड़ा में बच्चों की कहानियाँ ढूँढ़ते वक़्त, मैं सिर्फ़ 'कथात्मक कविताएँ' ही ढूँढ़ पाई। चित्र पुस्तकें कहीं नहीं थीं। अधिकतर क़िताबें अनुवादित थीं जिनमें शब्दों का इस्तेमाल, वाक्य संरचना और कुछ प्रसंग बच्चों के संज्ञानात्मक स्तर के परे थे। तब मुझे हमारी संस्कृति में अन्तर्निहित लोककथाओं के पुनर्लेखन और साथ ही, हमारे परिवेश के प्रति प्रासंगिक कुछ नई कहानियों को लिखने का ख़्याल आया। चूँकि अध्यापक बच्चों के साथ मेलजोल करते हैं और उन्हें अच्छी तरह जानते हैं, उनके द्वारा लिखी गई कहानियाँ प्रासंगिक व सार्थक होती हैं। बेंगलूरु ज़िला संस्थान (अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन) ने बच्चों के लिए कहानियों का संग्रह तैयार करने के उद्देश्य से आँगनवाड़ी और सरकारी प्राथमिक स्कूलों के शिक्षकों के लिए कहानी-लेखन पर एक कार्यशाला का आयोजन किया। नतीजतन हमें बहुत सारी कहानियाँ मिलीं।

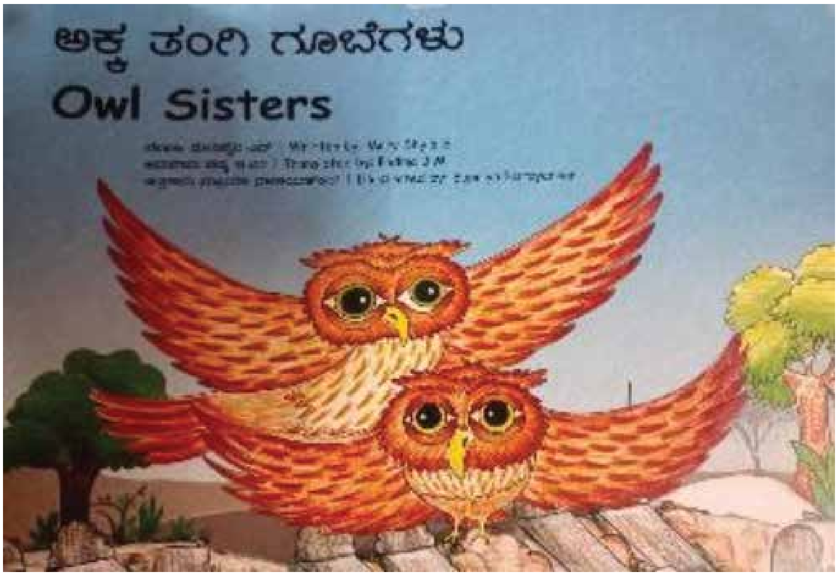
कार्यप्रणाली

चूँकि कर्नाटक के विभिन्न क्षेत्रों की बोलियाँ, रीति-रिवाज़ और वातावरण अलग-अलग हैं, यह तय किया गया कि कहानियाँ रचने के लिए सभी क्षेत्रों के अध्यापकों को एक ही छत के नीचे लाया जाए। कार्यशाला से पहले, हमने बच्चों के साहित्य से बहुत-सी अनुवादित व चित्रित कहानियाँ पढ़ीं और उन्हें उनकी विषयवस्तु के अनुसार छाँटकर रख दिया। हमने कहानियों के केन्द्र और उनमें निहित सीख पर भी विचार-विमर्श किया।

कुछ कहानियाँ ऐसी थीं जिनसे बच्चे जुड़ पाए, जैसे कि अक्का तंगी गूबेगलु (उल्लू बहनें), जिसे हमने चित्रित करके द्विभाषी किताब के रूप में प्रकाशित किया था। यह कहानी उन्हीं अध्यापकों में से एक द्वारा लिखी गई थी। और भी कई थीं : हुणसे *पेपरमिंट* (इमली कैंडी), इमली कैंडी बनाते वक़्त दुविधा में पड़ी दो बहनों की कहानी; और पुट्टिया प्रश्नेगलु (पुट्टी के प्रश्न), एक छोटी-सी लड़की पुट्टी के बारे में, जो अपनी दादी के गाँव जाते समय रास्ते में आती हरेक चीज़ पर सवाल करती है। मर *राक्षस* (पेड़ पर राक्षस), एक ऐसे राक्षस की कहानी थी जो उसका पेड़ काटने आए लकड़हारे के घर बड़ी दावत खाने आता है।



चित्र-1 : पुट्टिया प्रश्नेगलु (पुट्टी के प्रश्न) कहानी का एक चित्र। कहानी और चित्र कार्यशाला में बनाए गए थे।



चित्र-2 : अक्का तंगी गूबेगलु (उल्लू बहनें), कहानी का एक चित्र। कहानी और चित्र कार्यशाला में बनाए गए थे।

बच्चे इन कहानियों के साथ जुड़ पाए और उन्हें ये बहुत ही रोचक व मज़ेदार लगीं। बच्चों के भाषा विकास में इन कहानियों का व्यापक रूप से प्रयोग किया गया। उदाहरण के तौर पर, हुणसे *पेपरमिंट* (इमली कैंडी) कहानी में, कैंडी बनाने में इस्तेमाल की जाने वाली सामग्री की सूची बच्चों ने ख़ुद ही बनाई थी। एक अन्य उदाहरण के तौर पर, मैंगलोर के एक अध्यापक ने, मौसम (नमी) और संस्कृति की अवधारणाएँ पेश करती अपनी कहानी तम्पु *गालि* में, हाथ-पंखा झलने की पद्धति का इस्तेमाल किया।

कथाकारिता और अधिगम

हमने प्रथम और नेशनल बुक ट्रस्ट (एनबीटी) द्वारा प्रकाशित पुस्तकों का इस्तेमाल न सिर्फ़ भाषा विकास को बल्कि गणित व विज्ञान के हमारे शिक्षाशास्त्र को भी समृद्ध करने के लिए किया।

भाषा विकास व कल्पनाशीलता

बच्चों के ख़ुद पढ़ना सीखने से पहले, उन्हें प्राथमिक स्तर पर कहानियाँ सुनाने से उन्हें पता चलता है कि बोलचाल की भाषा अपने आप में लिखित या साहित्यिक, भाषा से अलग होती है। कहानियों द्वारा बच्चों का नई शब्दावली से परिचय होता है और वे वर्ण व उनके उच्चारण की आवाज़ पहचानने लगते हैं। उदाहरण के लिए : *मंगुविना बुगुरी* (मंगु का लट्टू, एनबीटी) में मंगु एक पुराने लट्टू को तेल और रंगों से नया 'बना' देता है। बाद में उसे उसमें एक छेद दिखाई देता है और वह उदास हो जाता है। पर जब वह उसे घुमाता है, यह देखने के लिए कि लट्टू पहले जैसे घूमता है या नहीं, तो वह हैरान रह जाता है क्योंकि अब लट्टू सीटी की आवाज़ के साथ घूमता है। अब उसके पास एक 'सीटी वाला लट्टू' है। साथ ही, यह कहानी सुनने से बच्चे ऐसे बहुत से नए शब्द सीख जाते हैं जिनसे वे सम्बन्ध रखते हैं।

कहानियाँ बच्चों की कल्पनाशीलता विकसित करती हैं व उनकी सोच पर असर डालती हैं। उदाहरण के लिए, *प्रकृतिया कोडुगे* (नेचर्स गिफ़्ट, एनबीटी) में, एक हाथी बया (एक बुनकर पक्षी; कन्नड़ा में 'गीजग') की तरह उड़ना चाहता है और क्योंकि हाथी और बया दोस्त थे, हाथी उसे यह बात बता देता है। बया अपने झुण्ड के सभी पक्षियों से एक-एक पंख लेती है और हाथी के लिए दो बड़े से पंख बुन देती है। इस बिन्दु पर, कहानी रोक दी गई और बच्चों से पूछा गया कि क्या उन्हें लगता है कि हाथी उड़ पाएगा? कुछ बच्चों ने जवाब दिया, "उड़ सकता है क्योंकि अब उसके पास इतने बड़े पंख जो हैं," लेकिन कुछ अन्य ने कहा कि हाथी उड़ने के लिहाज़ से बहुत भारी था। बच्चों ने तर्क कर अपने लिए उत्तर ढूँढ़ लिया।

एक अन्य कहानी, *ओमबत्तु पुट्टा मरिगलु* (नौ नन्हे पक्षी, एनबीटी) में, माँ मुर्गी पिता मुर्गे को अण्डों का ध्यान रखने के लिए कहती है और पानी पीने चली जाती है। लेकिन एक तूफ़ान आ जाता है और कुछ अण्डे टूट जाते हैं। मुर्गे को एक उपाय सूझता है। यहाँ पर रुककर, बच्चों से पूछा गया कि उसने क्या उपाय सोचा होगा। कुछ ने कहा कि मुर्गे ने अण्डों के खोल को चिपकाकर जोड़ दिया होगा, दूसरों ने सोचा कि मुर्ग़े ने क़बूल कर लिया होगा कि अण्डे टूट गए थे।

सबसे ज़्यादा हैरानी मुझे *हारलु कलित मंगट्टे मरिहक्कि* (धनेश के बच्चे ने उड़ना सीखा, एनबीटी) नाम की एक कहानी पर एक बच्चे की प्रतिक्रिया से हुई। इस कहानी में, धनेश का एक जोड़ा एक घोंसला बनाता है और उसमें तीन अण्डे देता है। धनेश का एक बच्चा पैदा होता है पर वह उड़ने से डरता है। सो बच्चे को उड़ना सीखने के लिए, बढ़ावा देने के लिए, उसके माता-पिता बाक़ी दो अण्डों को फेंक देते हैं। जब बच्चों

से अन्दाज़ा लगाने के लिए पूछा गया कि माँ ने ऐसा क्यों किया होगा, तो छह साल का एक बच्चा बोला, "इतने बच्चों को खाना खिलाना मुश्किल होता, इसलिए उसने दो अण्डे फेंक दिए!" बच्चे कितने अलग ढंग से सोचते हैं! कथाकारिता बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में मदद करती है और उन्हें ख़ुद से सोचने के लिए प्रेरित करती है।

गणित सीखना

प्रारम्भिक गणित कहानियों द्वारा सिखाने से बच्चों को अवधारणाओं को आसानी से समझने में मदद मिलती है। ऊपर बताई गई कहानी *ओमबत्तु पुट्टा मरिगलु* में, मुर्गा आठ अलग-अलग पक्षियों के अण्डे इकट्ठे करता है और उन्हें घोंसले में रख देता है। कुछ दिनों बाद, अण्डों से चूज़े निकलते हैं और खाने की तलाश में चल देते हैं। रास्ते में उन्हें अपनी-अपनी प्रजातियों के पक्षियों के झुण्ड मिलते हैं और वे एक-एक करके अपने-अपने झुण्ड के साथ उड़ जाते हैं। प्रश्न थे : हर बार कितने पक्षी उड़ गए? कितने पक्षी बचे? इस तरह बच्चे स्वाभाविक ढंग से घटाना सीख गए।

विज्ञान सीखना

हमने एक कहानी, *मांत्रिक तुण्डु* (जादुई गुटका, प्रथम) का इस्तेमाल करते हुए बच्चों का 'चुम्बकत्व' से परिचय करवाया। एक छोटी-सी लड़की को उसके भाई के कमरे में एक चुम्बक मिलता है और वह पाती है कि कुछ चीज़ें उससे चिपकती हैं जबकि कुछ नहीं। बच्चों को कहानी सुनाने के बाद, उन्हें एक चुम्बक का टुकड़ा दिया गया और उनसे कहा गया कि जो चीज़ें उस टुकड़े के साथ चिपक रही थीं उनकी सूची बनाएँ। गतिविधि करते वक़्त भी बच्चे दिलचस्पी ले रहे थे और जिज्ञासु बने हुए थे। पक्षियों की कहानी से उन्हें पता चला कि अण्डों में से चूज़े कितने समय बाद निकलते हैं, उनकी ख़ुराक़ व जीने का तरीक़ा कैसा होता है। एक अन्य कहानी, *मुनिया पदेड़ा निधि* (मुनिया ने पाया सोना, एनबीटी) ने उन्हें पौधे के विकास के अलग-अलग चरणों से परिचित कराया।

सामाजिक विज्ञान सीखना

प्रारम्भिक अधिगम में, परिवार, विभिन्न पेशों व क्षेत्रों, चित्रित पात्रों व घटनाओं का परिचय शामिल होता है। कहानी *क्षौरा दिनाचरणें* (सालाना बाल-कटाई दिवस, प्रथम) में, शृंगेरी श्रीनिवास, कहानी का एक पात्र, अपने बाल कटवाने कई पेशेवर लोग जैसे दर्ज़ी, बढ़ई और एक नाई के पास जाता है। कहानी के चित्रित संवादों के द्वारा बच्चे आसानी से इन पात्रों को पहचान गए। परिवार के सदस्यों को कहानी में शामिल करने से विभिन्न रिश्तों का परिचय करवाना भी आसान हो गया। एक अन्य कहानी, *सडाको ससाकी मत्तु साविरा कागदक्रेनगलु* (सडाको ससाकी एंड द थाउजेंड पेपर क्रेन्स) में, सडाको ससाकी दो साल की एक बच्ची थी जब हिरोशिमा पर परमाणु बम गिराया गया था। नतीजतन, दस साल की उम्र में उसे कैंसर हो गया। ससाकी ने एक हज़ार काग़ज़ की क्रेनें बनानी शुरू कर दीं इस उम्मीद से कि अगर वह इस लक्ष्य को पूरा कर लेती है तो वह तथा परमाणु बम के विकिरण से प्रभावित अन्य जापानी लोग ज़िन्दा रह पाएँगे। पर यह काम पूरा होने से पहले ही वह गुज़र गई और बाद में यही काम उसके दोस्तों ने पूरा किया। इस कहानी को सुनकर बच्चों के लिए बमबारी की पृष्ठभूमि और उसके परिणामों को समझना आसान हो गया।

जागरूकता बढ़ाना

कहानी सुनाते वक़्त पूछे गए प्रश्न जागरूकता व समानुभूति बढ़ाने में अहम भूमिका निभाते हैं। यदि बच्चों से पूछा जाए



***चित्र-3** : ओमबत्तु पुट्टा मरिगलु (नौ नन्हे पक्षी, एनबीटी) कहानी का एक चित्र।*

कि अगर वे कहानी का एक पात्र होते तो क्या करते, तो इससे उनके सोचने व समस्या हल करने के कौशल-विकास में मदद मिलती है। उदाहरण के लिए, अगर कहानी सपनों के बारे में है : तुम क्या सपना देखते हो? यदि कहानी डर के बारे में है : तुम्हें किससे डर लगता है? जब तुम्हें डर लगता है तब तुम क्या करते हो? बच्चों की प्रतिक्रियाओं पर प्रश्न करने से उन्हें अपनी भावनाएँ अभिव्यक्त करने का मौक़ा मिलता है और साथ ही, वे अपने जीवन को स्कूली शिक्षा के साथ जोड़ पाते हैं।

मूल्य खोजना

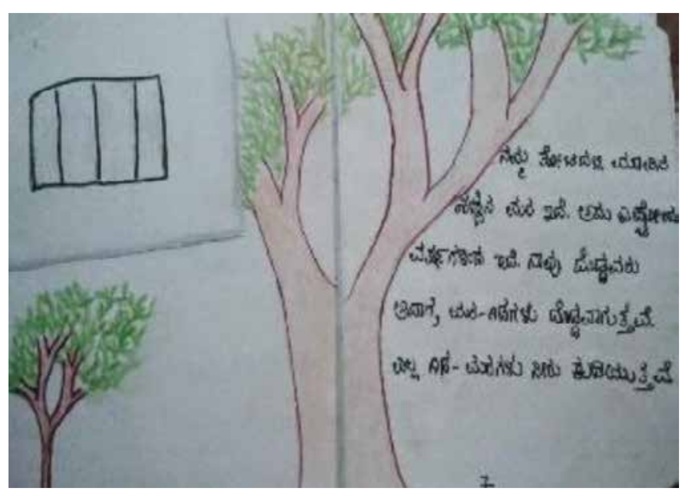
कहानी *प्रकृतिया कोडुगे* में, जिसका उल्लेख पहले किया गया है, एक बया और हाथी दोस्त हैं। जब हाथी उड़ना चाहता है, तो बया उसके लिए पंख बुनती है और उसे उड़ना सिखाती है। पर हाथी ज़मीन पर गिर जाता है, जिससे बया उदासी और ग्लानि से भर जाती है। हालाँकि आख़िर में, बया और हाथी दोनों को एहसास होता है कि उनके शारीरिक गुण अलग-अलग हैं। जब बच्चों से इस पर उनकी राय पूछी गई, तो कुछ ने कहा पक्षी ने अपने दोस्त की मदद करके बहुत अच्छा किया। कुछ को, हाथी के गिर जाने और चोट लगने पर बया का उससे माफ़ी माँगना अनुचित लगा। एक टोली ने कहा कि उन्हें आख़िर में हाथी और बया के बीच की बातचीत अच्छी लगी। जब बच्चे अपने आप ही इतने विभिन्न दृष्टिकोणों से देख पा रहे थे, तो हमें कहानी से महज़ एक नैतिक मूल्य ढूँढ़ निकालने की ज़रूरत नहीं लगी।

कुछ उपयोगी युक्तियाँ

- बच्चों को कहानी सुनाते वक़्त किसी मज़ेदार मोड़ पर रुक जाएँ और कुछ सवाल पूछें। उन्हें कहानी पूरा करने के लिए कहें, मौखिक या लिखित रूप से। उदाहरण के तौर पर, जब यह वाक्य, "एक लोमड़ी कुएँ में गिर गई", पढ़ा गया तो सवाल पूछा गया, "तुम्हें क्या लगता है कि लोमड़ी कुएँ से कैसे बाहर आई होगी?" बच्चों ने निम्न तरीकों से कहानी पूरी की : "कुएँ में सीढ़ियाँ थी और लोमड़ी उन पर चढ़कर ऊपर आ गई।" "लोमड़ी कुएँ में फैली लताओं के सहारे ऊपर चढ़ आई" और "लोमड़ी दूसरों की सहायता से ऊपर आ गई।"
- आसान अँग्रेज़ी कहानियों का कन्नड़ा में अनुवाद व चित्रण किया जा सकता है। ऐसा किसी भी भाषा के लिए किया जा सकता है।
- जब बच्चों को चित्रों की एक शृंखला दी गई, तो उन्होंने विभिन्न कहानियाँ लिखीं जिन्हें स्कूल के पुस्तकालय में दूसरे बच्चों के पढ़ने के लिए रख दिया गया।

साथ ही, बच्चों के भाषा अधिगम में अहम भूमिका निभाने के अलावा, कहानियाँ अपने पात्रों और विषयवस्तु के द्वारा बच्चों के सामाजीकरण की महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया में भी उनकी मदद करती हैं, जो उनके स्कूली जीवन का एक बहुत ज़रूरी पहलू है।





चित्र-4-5 *: अनुवादित की गई कहानी पर बच्चों द्वारा बनाए गए चित्र।*



पद्मा बी. एम. अज़ीम प्रेमजी फ़ाउंडेशन में स्रोत व्यक्ति हैं और बेंगलूरु के सरकारी स्कूलों के साथ काम करती हैं। उन्होंने कन्नड़ा में एमए किया है और वे शिक्षा के क्षेत्र में पिछले 15 वर्षों से कार्यरत हैं। उनका मानना है कि अच्छी गुणवत्ता की प्राथमिक शिक्षा बच्चों के सम्पूर्ण विकास का आधार है। उनसे *padmavathamma.munivenkatappa@azimpremjifoundation.org* पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : पूनम जैन **पुनरीक्षण :** अतुल वाधवानी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय